BSKS – 191

BAG (Sanskrit)

&

BAFSK (FYUP Major) Programmes

सत्रीय कार्य

(जनवरी, **2026** एवं जुलाई, **2026** सत्रों के लिए)

BSKS – 191 भारतीय वास्तुकला प्रणाली

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

सत्रीय कार्य (2026)

पाठ्यक्रम कोड : **BSKS -191/2026**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है । सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं । सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे ।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं । यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें ।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए ।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

दिनाँक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए । फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए । अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए ।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए । अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए । निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए । उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए । मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए ।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें ।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए ।

शुभकामनाओं के साथ ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जनवरी, 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2026

जुलाई, 2026 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2027

सत्रीय कार्य : **BSKS – 191** भारतीय वास्तुकला प्रणाली

पाठ्यक्रम कोड **BSKS – 191**

पाठ्यक्रम शीर्षक : भारतीय वास्तुकला प्रणाली

सत्रीय कार्य : **BSKS – 191/TMA/2026**

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -

(क) अधोलिखित श्लोकों में से किन्ही तीन श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए: - **15X3=45**

(1) परगेहकृताः सर्वाः श्रौतस्मार्तक्रियाः शुभाः ।
निष्फलाः स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते ।।

(2) जलान्तं प्रस्तरान्तं वा पुरुषान्तमथापि वा ।
क्षेत्रं संशोध्य वोद्धृत्य शल्यं सदनमारभेत् ।।

(3) मूलद्वारं नान्यैर्द्वारैरभिसन्दधीत रूपद्धर्या ।
घट-फल-पत्र-प्रथमादिभिश्च तन्मङ्गलैश्चिनुयात् ।।

(4) नन्द्यावर्तमलिन्दैः शालाकुड्यात प्रदक्षिणान्तगतैः ।
द्वारं पश्चिममस्मिन् विहाय शेषाणि कार्याणि ।।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : - **10X3=30**

1. वास्तुशास्त्र की आचार्य परम्परा का वर्णन कीजिए ।

2. भूमि-परीक्षण की किन्हीं दो विधियों का उल्लेख कीजिए ।

3. शकुन के द्वारा भूमि में शल्य का ज्ञान किस प्रकार किया जाता है? स्पष्ट कीजिए ।

4. द्वारवेधफलों का विस्तृत वर्णन कीजिए ।

(ग) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: - **5X5=25**

(i) राहु मुख पुच्छ विचार **(ii)** त्रिशालवास्तु **(iii)** मर्मस्थान

(iv) वास्तु-प्रयोजन **(v)** आयादि शुद्धि विचार